

## CHAPTER पचपन

### प्रद्युम्न कथा

इस अध्याय में बतलाया गया है कि किस तरह भगवान् कृष्ण के पुत्र-रूप में प्रद्युम्न का जन्म हुआ और किस तरह फिर शम्बर असुर ने उसका अपहरण कर लिया। इसमें इसका भी वर्णन हुआ है कि प्रद्युम्न किस तरह शम्बर को मार कर अपनी पत्नी समेत घर लौटे।

जब भगवान् वासुदेव के अंश-रूप कामदेव शिवजी के क्रोध से भस्म हो गये तो वे रुक्मिणी की कोख से प्रद्युम्न के अंश-रूप में पुनः उत्पन्न हुए। शम्बर नामक असुर ने इन्हें अपना शत्रु मान कर प्रसूतिगृह से ही, जब ये दस दिन के भी नहीं थे, उनका अपहरण कर लिया। उसने प्रद्युम्न को समुद्र में फेंक दिया और फिर अपने राज्य को चला गया। एक बलशाली मछली प्रद्युम्न को निगल गई जिसे मछुओं ने जाल में फँसा लिया। उन्होंने इस बड़ी मछली को ले जाकर शम्बर को भेंट किया और जब उसके रसोइयों ने उसे काटा तो उसके पेट से एक बालक मिला। रसोइये ने इस बालक को मायावती दासी को दे दिया जो उसे देखकर चकित हो गई। तभी नारदमुनि ने वहाँ आकर इस बालक के बारे में उसे सब बतलाया। मायावती वास्तव में कामदेव की पत्नी रतिदेवी थी। अपने पति को नवीन शरीर धारण करके फिर से जन्म लेने की प्रतीक्षा करते हुए उसने शम्बर के घर में खाना बनाने की नौकरी कर ली थी। चूँकि अब वह जान गई थी कि यह बालक कौन है, अतः उसके प्रति उसमें उत्कट स्नेह प्रकट होने लगा। अल्पकाल में ही प्रद्युम्न युवक हो गया और अपने सौन्दर्य से स्त्रियों को मुग्ध करने लगा।

एक बार रतिदेवी प्रद्युम्न के पास गई और माधुर्य-भाव में अपनी भौंहें मटकाने लगी। उसे माँ कहकर सम्बोधित करते हुए प्रद्युम्न ने टिप्पणी की कि वह अपने समुचित वात्सल्य-भाव को त्याग कर कामुक प्रेमिका की तरह आचरण क्यों कर रही है। तब रति ने प्रद्युम्न को बतलाया कि वे दोनों कौन हैं। उसने प्रद्युम्न को सलाह दी कि वह शम्बर असुर को मारे जिसके लिए उसने उसे महामाया नामक योगमंत्रों की शिक्षा दी। प्रद्युम्न ने शम्बर के पास जाकर उसे अनेक प्रकार से अपमानित करके क्रुद्ध किया तथा लड़ने के लिए ललकारा। इस पर शम्बर ने क्रुद्ध होकर अपनी गदा उठाई और बाहर निकल आया। उसने प्रद्युम्न पर अनेक जादू-टोने किये किन्तु प्रद्युम्न ने महामाया मंत्रों के बल पर उन सबों को छूमन्तर कर दिया और तब अपनी तलवार से शम्बर का सिर छिन्न कर दिया। उस समय रतिदेवी आकाश में प्रकट हुई और वह प्रद्युम्न को द्वारका ले गई।

जब प्रद्युम्न तथा उसकी पत्नी कृष्ण के अन्तःपुर में प्रविष्ट हुए तो अनेक सुन्दरी स्त्रियों ने सोचा कि वे साक्षात् कृष्ण हैं। उनका रूप तथा वेश भगवान् जैसा ही था। वे स्त्रियाँ लज्जावश इधर-उधर भाग कर छिप गईं। किन्तु थोड़ी देर बाद उन्हें प्रद्युम्न तथा कृष्ण के रूपों में थोड़ा अन्तर दिखा तो वे समझ गईं कि यह कृष्ण नहीं हैं, अतः उन्होंने चारों ओर से उन्हें घेर लिया।

जब रुक्मिणीदेवी ने प्रद्युम्न को देखा तो वे मातृ-प्रेम से अभिभूत हो उठीं और तुरन्त उनके स्तनों से दूध चूने लगा। यह देखकर कि प्रद्युम्न बिल्कुल कृष्ण ही जैसा दिखता है, वे पता लगाने के लिए उत्सुक हो उठीं कि वह कौन है। उन्हें स्मरण हो आया कि किस तरह उनका एक पुत्र प्रसूतिगृह से चुरा लिया गया था। उन्होंने सोचा, “यदि वह अभी जीवित है, तो वह मेरे समक्ष खड़े इस प्रद्युम्न की ही आयु वाला होगा।” जब वे इस तरह सोच-विचार कर रही थीं तभी कृष्ण देवकी तथा वसुदेव के साथ वहाँ आ गये। यद्यपि कृष्ण सारी स्थिति को भलीभाँति समझ गये थे, किन्तु वे मौन रहे। तभी नारदमुनि आये और उन्होंने सारी बातें बतलाईं। सभी लोग यह वृत्तान्त सुनकर चकित थे और उन्होंने परम प्रसन्नतापूर्वक प्रद्युम्न को गले लगा दिया।

चूँकि प्रद्युम्न का सौन्दर्य कृष्ण के सौन्दर्य से काफी कुछ मिलता-जुलता था अतः प्रद्युम्न के प्रति मातृ-स्नेह रखने वाली स्त्रियाँ उन्हें अपने प्रेमी के रूप में देखने लगीं। चूँकि वे कृष्ण के हू-बहू प्रतिबिम्ब थे, अतः उनका इस प्रकार से उन्हें देखना स्वाभाविक था।

श्रीशुक उवाच

कामस्तु वासुदेवांशो दग्धः प्राग्रुद्रमन्युना ।  
देहोपपत्तये भूयस्तमेव प्रत्यपद्यत ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—शुकदेव गोस्वामी ने कहा; कामः—कामदेव; तु—तथा; वासुदेव—भगवान् वासुदेव का; अंशः—अंश;  
दग्धः—जला हुआ; प्राक्—पूर्वकाल में; रुद्र—शिव के; मन्युना—क्रोध से; देह—शरीर; उपपत्तये—प्राप्त करने के उद्देश्य से;  
भूयः—पुनः; तम्—उसको, वासुदेव को; एव—निस्सन्देह; प्रत्यपद्यत्—वापस आ गया।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : वासुदेव का अंश कामदेव पहले ही रुद्र के क्रोध से जल कर राख हो चुका था। अब नवीन शरीर प्राप्त करने के लिए वह भगवान् वासुदेव के शरीर में पुनः लीन हो गया।

तात्पर्य : श्रील रूप गोस्वामी ने कृष्णसन्दर्भ (अनुच्छेद ८७) में गोपाल तापनी उपनिषद् का

निम्नलिखित श्लोक (२.४०) यह सिद्ध करने के लिए उद्धृत किया है कि कृष्ण तथा रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न वही प्रद्युम्न हैं, जो भगवान् कृष्ण के शाश्वत चतुरंगी स्वांशों अर्थात् चतुर्व्यूह में से एक सदस्य हैं—

*यत्रासौ संस्थितः कृष्णस्त्रिभिः शक्त्या समाहितः ।*

*रामानिरुद्धप्रद्युम्नै रुक्मिण्या सहितो विभुः ॥*

“द्वारका में सर्वशक्तिमान एवं पूर्ण शक्तियों से समन्वित भगवान् कृष्ण अपने तीन अंशों—बलराम, अनिरुद्ध तथा प्रद्युम्न समेत रह रहे थे।” श्रीमद्भागवत के इस श्लोक के सन्दर्भ में कृष्णसन्दर्भ में आगे बतलाया गया है कि “रुद्र ने जिस कामदेव को क्रुद्ध होकर भस्म कर दिया था, वह इन्द्र के अधीन देवता है। यह काम देवता आदि-कामदेव प्रद्युम्न का अंशांश है, जबकि प्रद्युम्न वासुदेव के स्वांश हैं। अपने आप नवीन शरीर प्राप्त करने में अक्षम होने पर कामदेव प्रद्युम्न के शरीर में प्रवेश कर गया, अन्यथा रुद्र का कोपभाजन होने के कारण, उसे सदा के लिए बिना शरीर के रहना पड़ता।”

श्रील प्रभुपाद ने श्रीमद्भागवत के तात्पर्य (१.१४.३०) में भगवान् कृष्ण के प्रथम पुत्र प्रद्युम्न के परम पद की पुष्टि की है कि “प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध भी भगवान् के अंश हैं अतः वे भी विष्णुतत्त्व हैं। द्वारका में भगवान् वासुदेव अपने स्वांशों—संकर्षण, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध के साथ अपनी दिव्य लीलाओं में व्यस्त रहते हैं अतएव इन तीनों में से हरएक को भगवान् कह कर पुकारा जा सकता है...।”

श्रील श्रीधर स्वामी के अनुसार प्रद्युम्न का जन्म रुक्मिणी की कोख से, जाम्बवती के साथ कृष्ण के विवाह तथा उनके अन्य विवाहों के पूर्व हुआ था। बाद में, प्रद्युम्न शम्बर के महल से वापस आये। किन्तु इसके पूर्व कि शुकदेव गोस्वामी कृष्ण की अन्य पत्नियों के साथ उनकी लीलाओं का वर्णन करें, सांतत्य की दृष्टि से वे प्रद्युम्न की पूरी कथा कह सुनायेंगे।

श्रील श्रीधर स्वामी यह भी लिखते हैं कि कामदेव जो कि अब प्रद्युम्न के भीतर प्रकट हो रहा था, वासुदेव का अंश है, क्योंकि वह चित्त से प्रकट होने वाला तत्त्व है, जिसके अधिष्ठाता वासुदेव हैं। यह कामदेव भौतिक उत्पत्ति का कारण भी है। जैसाकि भगवान् ने भगवद्गीता (१०.२८) में कहा है—  
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः—प्रजनकों में मैं कन्दर्प (काम) हूँ।

स एव जातो वैदर्भ्या कृष्णवीर्यसमुद्भवः ।  
प्रद्युम्न इति विख्यातः सर्वतोऽनवमः पितुः ॥ २ ॥

**शब्दार्थ**

सः—वह; एव—निस्सन्देह; जातः—उत्पन्न; वैदर्भ्याम्—विदर्भ की पुत्री से; कृष्ण-वीर्य—भगवान् कृष्ण के वीर्य से; समुद्भवः—उत्पन्न; प्रद्युम्नः—प्रद्युम्न; इति—इस प्रकार; विख्यातः—विख्यात; सर्वतः—सभी प्रकार से; अनवमः—निकृष्ट (कम) नहीं; पितुः—तो हिस् फथेर्.

उसका जन्म वैदर्भी की कोख से भगवान् कृष्ण के वीर्य से हुआ और उसका नाम प्रद्युम्न पड़ा। वह अपने पिता से किसी भी तरह कम नहीं था।

तं शम्बरः कामरूपी हत्वा तोकमनिर्दशम् ।  
स विदित्वात्मनः शत्रुं प्रास्योदन्वत्यगाद्गृहम् ॥ ३ ॥

**शब्दार्थ**

तम्—उसको; शम्बरः—शम्बर नामक असुर; काम—इच्छित; रूपी—रूप धारण करके; हत्वा—चुरा कर; तोकम्—शिशु को; अनिः-दशम्—अभी दस दिन का भी नहीं था; सः—वह (शम्बर); विदित्वा—जान कर; आत्मनः—अपना; शत्रुम्—शत्रु; प्रास्य—फेंक कर; उदन्वति—समुद्र में; अगात्—चला गया; गृहम्—अपने घर।

इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर लेने वाला शम्बर असुर उस शिशु को, जो अभी दस दिन का भी नहीं हुआ था, उठा ले गया। प्रद्युम्न को अपना शत्रु समझ कर शम्बर ने उसे समुद्र में फेंक दिया और फिर अपने घर लौट आया।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती इंगित करते हैं कि *विष्णु पुराण* के अनुसार प्रद्युम्न का अपहरण जन्म लेने के छठे दिन बाद हुआ।

तं निर्जंगार बलवान्मीनः सोऽप्यपरैः सह ।  
वृतो जालेन महता गृहीतो मत्स्यजीविभिः ॥ ४ ॥

**शब्दार्थ**

तम्—उसको; निर्जंगार—निगल गई; बल-वान्—बलशाली; मीनः—मछली; सः—वह (मछली); अपि—तथा; अपरैः—अन्यों के; सह—साथ; वृतः—घिर कर, फँस कर; जालेन—जाल से; महता—विशाल; गृहीतः—पकड़ ली गई; मत्स्य-जीविभिः—मछुआरों द्वारा।

प्रद्युम्न को एक बलशाली मछली निगल गई और यह मछली अन्य मछलियों के साथ मछुआरों द्वारा एक बड़े से जाल में फँसा कर पकड़ी गई।

तं शम्बराय कैवर्ता उपाजहुरुपायनम् ।

सूदा महानसं नीत्वावद्यन्सुधितिनाद्भुतम् ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

तम्—उस ( मछली ) को; शम्बराय—शम्बर को; कैवर्ताः—मछुआरों ने; उपाजहुः—भेंट कर दिया; उपायनम्—उपहार; सूदाः—रसोइयों ने; महानसम्—रसोई-घर में; नीत्वा—ले जाकर; अवद्यन्—खंड खंड कर दिया; सुधितिना—कसाई के चाकू से; अद्भुतम्—अद्भुत।

मछुआरों ने वह असामान्य मछली लाकर शम्बर को भेंट कर दी, जिसके रसोइये उसे रसोई-घर में ले आये, जहाँ वे उसे कसाई के चाकू से काटने लगे।

दृष्ट्वा तदुदरे बालम्मायावत्यै न्यवेदयन् ।  
नारदोऽकथयत्सर्वं तस्याः शङ्कितचेतसः ।  
बालस्य तत्त्वमुत्पत्तिं मत्स्योदरनिवेशनम् ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

दृष्ट्वा—देख कर; तत्—उसके; उदरे—पेट में; बालम्—शिशु को; मायावत्यै—मायावती को; न्यवेदयन्—दे दिया; नारदः—नारदमुनि ने; अकथयत्—कह सुनाया; सर्वम्—सभी; तस्याः—उससे; शङ्कित—चकित; चेतसः—जिसका मन; बालस्य—शिशु के; तत्त्वम्—विषयक बातें; उत्पत्तिम्—जन्म; मत्स्य—मछली के; उदर—पेट में; निवेशनम्—प्रवेश।

मछली के पेट में बालक पाकर रसोइयों ने यह बालक मायावती को दे दिया, जो चकित रह गई। तब नारदमुनि प्रकट हुए और उन्होंने उससे बालक के जन्म तथा मछली के पेट में उसके प्रवेश की सारी बातें कह सुनाई।

सा च कामस्य वै पत्नी रतिर्नाम यशस्विनी ।  
पत्युर्निर्दग्धदेहस्य देहोत्पत्तिम्प्रतीक्षती ॥ ७ ॥  
निरूपिता शम्बरेण सा सूदौदनसाधने ।  
कामदेवं शिशुं बुद्ध्वा चक्रे स्नेहं तदार्षके ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

सा—वह; च—तथा; कामस्य—कामदेव की; वै—वस्तुतः; पत्नी—पत्नी; रतिः नम—रति नामक; यशस्विनी—सुप्रसिद्ध; पत्युः—अपने पति के; निर्दग्ध—भस्म हुए; देहस्य—शरीर के; देह—शरीर की; उत्पत्तिम्—प्राप्ति; प्रतीक्षती—प्रतीक्षा करती; निरूपिता—नियुक्त; शम्बरेण—शम्बर द्वारा; सा—वह; सूद-ओदन—तरकारियों तथा चावल के; साधने—तैयार करने में; काम-देवम्—कामदेव के रूप में; शिशुम्—शिशु को; बुद्ध्वा—समझ कर; चक्रे—करने लगी; स्नेहम्—प्रेम; तदा—तब; अर्षके—शिशु के लिए।

वस्तुतः मायावती कामदेव की सुप्रसिद्ध पत्नी रति थी। वह अपने पति द्वारा नवीन शरीर प्राप्त करने की प्रतीक्षा में थी क्योंकि उसके पति का पिछला शरीर भस्म कर दिया गया था। मायावती को शम्बर द्वारा तरकारियाँ तथा चावल पकाने का काम सौंपा गया था। मायावती समझ गई थी कि यह शिशु वास्तव में कामदेव है, अतएव वह उससे प्रेम करने लगी थी।

**तात्पर्य :** श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ने इस कथा की व्याख्या इस प्रकार की है : जब कामदेव का शरीर जलकर राख हो गया तो रति ने कामदेव को दूसरा शरीर प्रदान कराने के लिए शिवजी की आराधना की। शम्बर भी आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए शिवजी के पास आया था। उन्होंने उसे पहचान लिया और कहा कि “पहले तुम आशीर्वाद माँगो।” रति को देख कर शम्बर कामवश हो गया अतः उसने कहा कि वरदान में वह रति को चाहता है। शिवजी ने हाँ कर दी। तब शिवजी ने व्याकुल रति को सान्त्वना दी कि “तुम इसके साथ जाओ और इसके घर में ही तुम्हें मनवांछित फल प्राप्त होगा।” तत्पश्चात् रति ने शम्बर को अपनी मोहिनी शक्ति से मोह लिया और मायावती नाम रखकर उसी के घर में पवित्र सती की तरह रहने लगी।

नातिदीर्घेण कालेन स कार्ष्णि रूढयौवनः ।  
जनयामास नारीणां वीक्षन्तीनां च विभ्रमम् ॥ ९ ॥

**शब्दार्थ**

न—नहीं; अति-दीर्घेण—बहुत लम्बे; कालेन—समय के बाद; सः—वह; कार्ष्णिः—कृष्ण का पुत्र; रूढ—प्राप्त; यौवनः—युवावस्था; जनयाम् आस—उत्पन्न किया; नारीणाम्—स्त्रियों के लिए; वीक्षन्तीनाम्—उस पर टकटकी लगाने वाली; च—तथा; विभ्रमम्—जादू।

कुछ काल बाद कृष्ण के इस पुत्र, प्रद्युम्न ने पूर्ण यौवन प्राप्त कर लिया। वह उन सारी स्त्रियों को मोहने लगा जो उसे देखती थीं।

सा तम्पतिं पद्मदलायतेक्षणं  
प्रलम्बबाहुं नरलोकसुन्दरम् ।  
सव्रीडहासोत्तभितभ्रुवेक्षती  
प्रीत्योपतस्थे रतिरङ्ग सौरतैः ॥ १० ॥

**शब्दार्थ**

सा—वह; तम्—उस; पतिम्—अपने पति को; पद्म—कमल के फूल की; दल-आयत—पंखड़ियों के समान फैली; ईक्षणम्—आँखें; प्रलम्ब—लटकती हुई; बाहुम्—बाँहें; नर-लोक—मानव समाज की; सुन्दरम्—सुन्दरता की सबसे बड़ी वस्तु; स-व्रीड—सलज्ज; हास—हँसी से युक्त; उत्तभित—उठी हुई; भ्रुवा—तथा भौंहों से युक्त; ईक्षती—देखती हुई; प्रीत्या—प्रेमपूर्वक; उपतस्थे—पास आई; रतिः—रति; अङ्ग—हे प्रिय ( राजा परीक्षित ); सौरतैः—दाम्पत्य आकर्षण ( सुरति ) के सूचक संकेतों से।

हे राजन्, सलज्ज हास तथा भौंहें ताने मायावती जब प्रेमपूर्वक अपने पति के पास पहुँची तो उसने दाम्पत्य आकर्षण के विविध संकेत प्रकट किये। उसके पति की आँखें कमल की पंखड़ियों की तरह फैली हुई थीं, उसकी भुजाएँ काफी लम्बी थीं और मनुष्यों में वह सर्वाधिक

मनोहर था।

तात्पर्य : मायावती प्रद्युम्न के प्रति अपना दाम्पत्य आकर्षण असली पहचान प्रकट होने के काफी पहले से प्रकट कर रही थी। स्वाभाविक है कि इससे प्रारम्भ में कुछ भ्रम उत्पन्न हुआ जैसाकि अगले श्लोक में वर्णन हुआ है।

तामह भगवान्कार्ष्णिर्मातस्ते मतिरन्यथा ।

मातृभावमतिक्रम्य वर्तसे कामिनी यथा ॥ ११ ॥

#### शब्दार्थ

ताम्—उससे; आह—कहा; भगवान्—भगवान्; कार्ष्णिः—प्रद्युम्न ने; मातः—हे माता; ते—तुम्हारा; मतिः—झुकाव; अन्यथा—अन्यथा; मातृ-भावम्—माता का भाव या मुद्रा; अतिक्रम्य—अतिक्रमण करके; वर्तसे—आचरण कर रही हो; कामिनी—प्रेयसी; यथा—सदृश।

भगवान् प्रद्युम्न ने उससे कहा, “हे माता, तुम्हारे मनोभाव बदल गये हैं। तुम मातोचित भावों का अतिक्रमण कर रही हो और एक प्रेयसी की भाँति आचरण कर रही हो।”

#### रतिरुवाच

भवान्नारायणसुतः शम्बरेण हृतो गृहात् ।

अहं तेऽधिकृता पत्नी रतिः कामो भवान्प्रभो ॥ १२ ॥

#### शब्दार्थ

रतिः उवाच—रति ने कहा; भवान्—आप; नारायण-सुत ह—भगवान् नारायण के पुत्र; शम्बरेण—शम्बर द्वारा; हृतः—चुराये जाकर; गृहात्—अपने घर से; अहम्—मैं; ते—तुम्हारी; अधिकृता—वैध; पत्नी—पत्नी; रतिः—रति; कामः—कामदेव; भवान्—आप; प्रभो—हे प्रभु।

रति ने कहा : आप भगवान् नारायण के पुत्र हैं और शम्बर द्वारा अपने माता-पिता के घर से हर लिए गये थे। हे प्रभु, मैं आपकी वैध पत्नी रति हूँ, क्योंकि आप कामदेव हैं।

एष त्वानिर्दशं सिन्धवक्षिपच्छम्बरोऽसुरः ।

मत्स्योऽग्रसीत्तदुदरादितः प्राप्तो भवान्प्रभो ॥ १३ ॥

#### शब्दार्थ

एषः—वह; त्वा—तुम; अनिः-दशम्—दस दिन के भी नहीं; सिन्धौ—समुद्र में; अक्षिपत्—फेंक दिया; शम्बरः—शम्बर ने; असुरः—असुर; मत्स्यः—मछली; अग्रसीत्—निगल गई; तत्—उसके; उदरात्—पेट से; इतः—यहाँ; प्राप्तः—प्राप्त किया; भवान्—आप; प्रभो—हे प्रभु।

उस शम्बर असुर ने जबकि आप अभी दस दिन के भी नहीं थे आपको समुद्र में फेंक दिया और एक मछली आपको निगल गई। तत्पश्चात् हे प्रभु, हमने इसी स्थान पर आपको मछली के

पेट से प्राप्त किया ।

तमिमं जहि दुर्धर्षं दुर्जयं शत्रुमात्मनः ।

मायाशतविदं तं च मायाभिर्मोहनादिभिः ॥ १४ ॥

**शब्दार्थ**

तम् इमम्—उसको; जहि—कृपया मार डालें; दुर्धर्षम्—जिसके पास तक पहुँचना कठिन है; दुर्जयम्—तथा जीत पाना कठिन है; शत्रुम्—शत्रु को; आत्मनः—अपनी; माया—जादूगरी से; शत—सैकड़ों; विदम्—जानने वाले; तम्—उसको; च—तथा; मायाभिः—अपने जादू से; मोहन-आदिभिः—मोहने के तथा अन्य ।

आप अपने इस अत्यन्त दुर्धर्ष तथा भयानक शत्रु का वध कर दें। यद्यपि यह सैकड़ों प्रकार के जादू जानता है किन्तु आप उसे जादू तथा अन्य विधियों से मोहित करके हरा सकते हैं।

परीशोचति ते माता कुररीव गतप्रजा ।

पुत्रस्नेहाकुला दीना विवत्सा गौरिवातुरा ॥ १५ ॥

**शब्दार्थ**

परीशोचति—विलाप कर रही है; ते—तुम्हारी; माता—माता ( रुक्मिणी ); कुररी इव—कुररी पक्षी की तरह; गत—गई हुई, विनष्ट; प्रजा—सन्तान; पुत्र—अपने पुत्र के लिए; स्नेह—स्नेह से; आकुला—विह्वल; दीना—दयनीय; विवत्सा—बछड़े से विहीन; गौः—गाय; इव—सदृश; आतुरा—अत्यन्त दुखी ।

अपना पुत्र खो जाने से बेचारी तुम्हारी माता तुम्हारे लिए कुररी पक्षी की भाँति विलख है। वह अपने पुत्र के प्रेम से उसी तरह अभिभूत है, जिस तरह अपने बछड़े से विलग हुई गाय।

प्रभाष्यैवं ददौ विद्यां प्रद्युम्नाय महात्मने ।

मायावती महामायां सर्वमायाविनाशिनीम् ॥ १६ ॥

**शब्दार्थ**

प्रभाष्य—कह कर; एवम्—इस प्रकार; ददौ—दे दिया; विद्याम्—योग-विद्या; प्रद्युम्नाय—प्रद्युम्न को; महा-आत्मने—महान् आत्मा; मायावती—मायावती; महा-मायाम्—महामाया नामक; सर्व—समस्त; माया—मोहनी शक्ति; विनाशिनीम्—विनाश करने वाली ।

[ शुकदेव गोस्वामी ने आगे बताया ] : इस प्रकार कहते हुए मायावती ने महात्मा प्रद्युम्न को महामाया नामक योग-विद्या प्रदान की, जो अन्य समस्त मोहिनी शक्तियों को विनष्ट कर देती है।

स च शम्बरमभ्येत्य संयुगाय समाह्वयत् ।

अविषह्यैस्तमाक्षेपैः क्षिपन्सञ्जनयन्कलिम् ॥ १७ ॥

**शब्दार्थ**



सः—वह; च—तथा; शम्बरम्—शम्बर को; अभ्येत्य—के पास जाकर; संयुगाय—युद्ध करने के लिए; समाह्वयत्—ललकारा; अविषह्यैः—असह्य; तम्—उसको; आक्षेपैः—अपमान द्वारा; क्षिपन् सञ्जनयन्—उकसाते हुए; कलिम्—लड़ने के लिए।

प्रद्युम्न शम्बर के पास गया और विवाद बढ़ाने के लिए उसे असह्य अपमानजनक बातें कह कर युद्ध करने के लिए ललकारा।

सोऽधिक्षिप्तो दुर्वाचोभिः पदाहत इवोरगः ।

निश्चक्राम गदापाणिरमर्षात्ताम्रलोचनः ॥ १८ ॥

#### शब्दार्थ

सः—वह, शम्बर; अधिक्षिप्तः—अपमानित; दुर्वाचोभिः—कटु वचनों द्वारा; पदा—पाँव से; आहतः—प्रहार किया गया; इव—सदृश; उरगः—सर्प; निश्चक्राम—बाहर निकल आया; गदा—गदा; पाणिः—अपने हाथ में लिये; अमर्षात्—असह्य क्रोध से; ताम्र—ताँबे जैसी लाल; लोचनः—आँखें किये।

इन कटु वचनों से अपमानित होकर शम्बर पाँव से कुचले गये सर्प की भाँति विक्षुब्ध हो उठा। वह हाथ में गदा लेकर बाहर निकल आया। उसकी आँखें क्रोध से लाल थीं।

गदामाविध्य तरसा प्रद्युम्नाय महात्मने ।

प्रक्षिप्य व्यनदन्नादं वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् ॥ १९ ॥

#### शब्दार्थ

गदाम्—अपनी गदा को; आविध्य—घुमाकर; तरसा—तेजी से; प्रद्युम्नाय—प्रद्युम्न पर; महा-आत्मने—चतुर; प्रक्षिप्य—फेंक कर; व्यनदन् नादम्—शोर उत्पन्न करता; वज्र—बिजली का; निष्पेष—प्रहार; निष्ठुरम्—तीव्र।

शम्बर ने तेजी से अपनी गदा घुमाई और इसे चतुर प्रद्युम्न पर फेंक दिया जिससे बिजली कड़कने जैसी तीव्र आवाज उत्पन्न हुई।

तामापतन्तीं भगवान्प्रद्युम्नो गदया गदाम् ।

अपास्य शत्रवे क्रुद्धः प्राहिणोत्स्वगदां नृप ॥ २० ॥

#### शब्दार्थ

ताम्—उस; आपतन्तीम्—अपनी ओर आती; भगवान्—भगवान्; प्रद्युम्नः—प्रद्युम्न ने; गदया—अपनी गदा से; गदाम्—गदा को; अपास्य—दूर भगाते; शत्रवे—अपने शत्रु पर; क्रुद्धः—क्रुद्ध; प्राहिणोत्—फेंका; स्त-गदाम्—अपनी गदा; नृप—हे राजा (परीक्षित)।

जैसे ही शम्बर की गदा उड़ती हुई भगवान् प्रद्युम्न की ओर आई, उन्होंने अपनी गदा से उसे दूर छिटका दिया। तब हे राजन्, प्रद्युम्न ने क्रुद्ध होकर शत्रु पर अपनी गदा फेंकी।

स च मायां समाश्रित्य दैतेयीं मयदर्शितम् ।

मुमुचेऽस्त्रमयं वर्ष काष्णीं वैहायसोऽसुरः ॥ २१ ॥

**शब्दार्थ**

सः—वह, शम्बर; च—तथा; मायाम्—जादू का; समाश्रित्य—आश्रय लेकर; दैतेयीम्—आसुरी; मय—मय दानव द्वारा; दर्शितम्—दिखलाई गई; मुमुचे—छोड़ा; अस्त्र-मयम्—हथियारों की; वर्षम्—वर्षा; काष्णीं—कृष्ण के पुत्र पर; वैहायसः—आकाश में खड़े; असुरः—असुर ने।

मय दानव द्वारा सिखलाए गये दैत्यों के काले जादू का प्रयोग करते हुए शम्बर सहसा आकाश में प्रकट हुआ और उसने कृष्ण के पुत्र पर हथियारों की झड़ी लगा दी।

बाध्यमानोऽस्त्रवर्षेण रौक्मिणेयो महारथः ।

सत्त्वात्मिकां महाविद्यां सर्वमायोपमर्दिनीम् ॥ २२ ॥

**शब्दार्थ**

बाध्यमानः—सताया गया; अस्त्र—हथियारों की; वर्षेण—वर्षा से; रौक्मिणेयः—रुक्मिणी-पुत्र, प्रद्युम्न; महा-रथः—शक्तिशाली योद्धा; सत्त्व-आत्मिकाम्—सतोगुण से उत्पन्न; महा-विद्याम्—महामाया नामक योग-विद्या ( का प्रयोग किया ); सर्व—समस्त; मया—जादू को; उपमर्दिनीम्—परास्त करने वाली।

हथियारों की इस झड़ी से तंग आकर महाबलशाली योद्धा रौक्मिणेय ने महामाया नामक योग-विद्या का प्रयोग किया जो सतोगुण से उत्पन्न थी और अन्य समस्त योगशक्तियों को परास्त करने वाली थी।

ततो गौह्यकगान्धर्वपैशाचोरगराक्षसीः ।

प्रायुङ्क्त शतशो दैत्यः कार्ष्णिर्व्यधमयत्स ताः ॥ २३ ॥

**शब्दार्थ**

ततः—तब; गौह्यक-गान्धर्व-पैशाच-उरग-राक्षसीः—गुह्यकों, गन्धर्वों, पिशाचों, उरगों तथा राक्षसों के ( हथियार ); प्रायुङ्क्त — प्रयोग किया; शतशः—सैकड़ों; दैत्यः—असुर ने; कार्ष्णिः—प्रद्युम्न ने; व्यधमयत्—मार गिराया; सः—उस; ताः—इनको।

तब उस असुर ने गुह्यकों, गन्धर्वों, पिशाचों, उरगों तथा राक्षसों से सम्बन्धित सैकड़ों मायावी हथियार छोड़े किन्तु भगवान् कार्ष्णि अर्थात् प्रद्युम्न ने उन सबों को विनष्ट कर दिया।

निशातमसिमुद्यम्य सकिरीटं सकुण्डलम् ।

शम्बरस्य शिरः कायात्ताम्रश्मश्र्वोजसाहरत् ॥ २४ ॥

**शब्दार्थ**

निशातम्—तेज धार वाली; असिम्—तलवार; उद्यम्य—उठाकर; स—सहित; किरीटम्—मुकुट; स—सहित; कुण्डलम्—कान के कुंडल; शम्बरस्य—शम्बर का; शिरः—सिर; कायात्—उसके शरीर से; ताम्र—ताम्र ( लाल ) रंग की; श्मश्रु—मूछें; ओजसा—बल से; अहरत्—अलग कर दिया।

अपनी तेज धार वाली तलवार खींच कर प्रद्युम्न ने बड़े ही वेग से शम्बर के सिर को लाल मूछों, मुकुट तथा कुंडलों समेत काट कर अलग कर दिया।

आकीर्यमाणो दिविजैः स्तुवद्भिः कुसुमोत्करैः ।  
भार्ययाम्बरचारिण्या पुरं नीतो विहायसा ॥ २५ ॥

**शब्दार्थ**

आकीर्यमाणः—वर्षा किया गया; दिवि-जैः—स्वर्ग के वासियों द्वारा; स्तुवद्भिः—प्रशंसा करते हुए; कुसुम—फूलों के; उत्करैः—बिखेरने से; भार्यया—अपनी पत्नी द्वारा; अम्बर—आकाश में; चारिण्या—विचरण करने वाले; पुरम्—पुरी (द्वारका) में; नीतः—लाया गया; विहायसा—आकाश के मार्ग से।

जब उच्च लोकों के वासी प्रद्युम्न पर फूलों की वर्षा करके उनकी प्रशंसा के गीत गा रहे थे तो उनकी पत्नी आकाश में प्रकट हुई और उन्हें आकाश के मार्ग से होते हुए द्वारकापुरी वापस ले गई।

अन्तःपुरवरं राजन्ललनाशतसङ्कुलम् ।  
विवेश पत्या गगनाद्विद्युतेव बलाहकः ॥ २६ ॥

**शब्दार्थ**

अन्तः-पुर—भीतरी महल; वरम्—सर्वोत्तम; राजन्—हे राजन् (परीक्षित); ललना—स्नेहमयी स्त्रियाँ; शत—सैकड़ों; सङ्कुलम्—एकत्रित; विवेश—प्रवेश किया; पत्या—अपनी पत्नी सहित; गगनात्—आकाश से; विद्युता—बिजली समेत; इव—सदृश; बलाहकः—बादल।

हे राजन्, जब प्रद्युम्न अपनी पत्नी समेत कृष्ण के सर्वोत्कृष्ट महल के भीतरी कक्षों में आकाश से उतरे, जो सुन्दर स्त्रियों से भरे थे तो वे बिजली से युक्त बादल जैसे प्रतीत हो रहे थे।

तं दृष्ट्वा जलदश्यामं पीतकौशेयवाससम् ।  
प्रलम्बबाहुं ताम्राक्षं सुस्मितं रुचिराननम् ॥ २७ ॥  
स्वलङ्क तमुखाम्भोजं नीलवक्रालकालिभिः ।  
कृष्णं मत्वा स्त्रियो ह्रीता निलिल्युस्तत्र तत्र ह ॥ २८ ॥

**शब्दार्थ**

तम्—उसको; दृष्ट्वा—देख कर; जल-द—बादल के समान; श्यामम्—साँवले रंग के; पीत—पीले; कौशेय—रेशमी; वाससम्—वस्त्र; प्रलम्ब—लम्बी; बाहुम्—भुजाएँ; ताम्र—लाल लाल; अक्षम्—आँखें; सु-स्मितम्—मनोहर मुस्कान से युक्त; रुचिर—लुभावना; आननम्—मुखमण्डल; सु-अलङ्क त—सुन्दर रंग से सजाया; मुख—मुँह; अम्भोजम्—कमल सदृश; नील—नीला; वक्र—कुंचित; आलक-आलिभिः—केशों की लटों से; कृष्णम्—कृष्ण; मत्वा—सोचते हुए; स्त्रियः—स्त्रियाँ; ह्रीताः—सकुचाई; निलिल्युः—छिप गई; तत्र तत्र—इधर-उधर; ह—निस्सन्देह।

जब उस महल की स्त्रियों ने उनके वर्षा के बादल जैसे साँवले रंग, उनके पीले रेशमी वस्त्रों, उनकी लम्बी भुजाओं, मनोहर हँसी से युक्त उनके आकर्षक कमल मुख, उनके सुन्दर आभूषण तथा उनके घुँघराले श्यामल बालों को देखा तो उन्होंने सोचा कि वे कृष्ण हैं। इस तरह सारी

स्त्रियाँ सकुचाकर इधर-उधर छिप गईं ।

अवधार्य शनैरीषद्वैलक्षण्येन योषितः ।

उपजग्मुः प्रमुदिताः सस्त्री रत्नं सुविस्मिताः ॥ २९ ॥

**शब्दार्थ**

अवधार्य—अनुभव करके; शनैः—धीरे-धीरे; ईषत्—कुछ कुछ; वैलक्षण्येन—दिखावे में अन्तर होने से; योषितः—स्त्रियाँ; उपजग्मुः—पास आईं; प्रमुदिताः—प्रफुल्लित; स—सहित; स्त्री—स्त्रियों के; रत्नम्—रत्न के; सु-विस्मितः—अत्यन्त चकित ।

धीरे-धीरे उनके तथा कृष्ण के वेश में कुछ कुछ अन्तरों से स्त्रियों को लगा कि वे भगवान् कृष्ण नहीं हैं। वे अत्यन्त प्रफुल्लित एवं चकित होकर प्रद्युम्न तथा उनकी प्रेयसी स्त्री-रत्न के पास आईं ।

अथ तत्रासितापाङ्गी वैदर्भी वल्गुभाषिणी ।

अस्मरत्स्वसुतं नष्टं स्नेहस्नुतपयोधरा ॥ ३० ॥

**शब्दार्थ**

अथ—तब; तत्र—वहाँ; असित—श्याम; अपाङ्गी—जिनकी आँखों की कोरें; वैदर्भी—रुक्मिणी ने; वल्गु—मधुर; भाषिणी—वाणी वाली; अस्मरत्—स्मरण किया; स्व-सुतम्—अपने पुत्र को; नष्टम्—खोये हुए; स्नेह—प्रेमवश; स्नुत—गीली; पयः—धरा—स्तनों वाली ।

प्रद्युम्न को देखकर मधुर वाणी एवं श्याम नेत्रों वाली रुक्मिणी ने अपने खोये हुए पुत्र का स्मरण किया, तो स्नेह से उनके स्तन भीग गये ।

को न्वयम्नरवैदूर्यः कस्य वा कमलेक्षणः ।

धृतः कया वा जठरे केयं लब्धा त्वनेन वा ॥ ३१ ॥

**शब्दार्थ**

कः—कौन; नु—निस्सन्देह; अयम्—यह; नर-वैदूर्यः—पुरुषों में मणि; कस्य—किसका ( पुत्र ); वा—तथा; कमल-ईक्षणः—कमल नेत्रों वाला; धृतः—धारण किया हुआ; कया—किस स्त्री द्वारा; वा—तथा; जठरे—अपने गर्भ में; का—कौन; इयम्—यह स्त्री; लब्धा—प्राप्त; तु—और भी; अनेन—उसके द्वारा; वा—तथा ।

[ श्रीमती रुक्मिणीदेवी ने कहा ] : पुरुषों में रत्न यह कमल नेत्रों वाला कौन है? यह किस पुरुष का पुत्र है और किस स्त्री ने इसे अपने गर्भ में धारण किया? और यह स्त्री कौन है, जिसे उसने अपनी पत्नी बनाया है?

मम चाप्यात्मजो नष्टो नीतो यः सूतिकागृहात् ।

एतत्तुल्यवयोरूपो यदि जीवति कुत्रचित् ॥ ३२ ॥

**शब्दार्थ**

मम—मेरा; च—तथा; अपि—भी; आत्मजः—पुत्र; नष्टः—खोया; नीतः—ले जाया गया; यः—कौन; सूतिका-गृहात्—प्रसूतिगृह से; एतत्—इसके; तुल्य—समान; वयः—उम्र; रूपः—तथा स्वरूप में; यदि—यदि; जीवति—जिन्दा है; कुत्रचित्—कहीं।

यदि मेरा खोया हुआ पुत्र, जो प्रसूतिगृह से हर लिया गया था, अब भी कहीं जिन्दा होता तो वह इसी नवयुवक की ही आयु तथा रूप का होता।

कथं त्वनेन सम्प्राप्तं सारूप्यं शार्ङ्गधन्वनः ।

आकृत्यावयवैर्गत्या स्वरहासावलोकनैः ॥ ३३ ॥

**शब्दार्थ**

कथम्—कैसे; तु—लेकिन; अनेन—उसके द्वारा; सम्प्राप्तम्—प्राप्त; सारूप्यम्—एक जैसा रूप; शार्ङ्ग-धन्वनः—शार्ङ्ग धनुष को धारण करने वाले कृष्ण के रूप में; आकृत्या—आकृति में; अवयवैः—अंगों से; गत्या—चाल से; स्वर—वाणी से; हास—हँसी; अवलोकनैः—तथा चितवन से।

किन्तु यह कैसे है कि यह नवयुवक अपने शारीरिक रूप तथा अपने अंगों, अपनी चाल तथा अपने स्वर और अपनी हँसी युक्त दृष्टि में मेरे स्वामी, शार्ङ्गधर कृष्ण से इतनी समानता रखता है?

स एव वा भवेन्नूनं यो मे गर्भे धृतोऽर्भकः ।

अमुष्मिन्प्रीतिरधिका वामः स्फुरति मे भुजः ॥ ३४ ॥

**शब्दार्थ**

सः—वह; एव—निस्सन्देह; वा—अथवा; भवेत्—होये; नूनम्—निश्चय ही; यः—जो; मे—मेरे; गर्भे—गर्भ में; धृतः—धारण किया हुआ; अर्भकः—शिशु; अमुष्मिन्—उसके लिए; प्रीतिः—स्नेह; अधिका—अधिक; वामः—बाईं; स्फुरति—फड़कती है; मे—मेरी; भुजः—बाँह।

हाँ, यह वही बालक हो सकता है, जिसे मैंने अपने गर्भ में धारण किया था क्योंकि इसके प्रति मुझे अतीव स्नेह का अनुभव हो रहा है और मेरी बाईं भुजा भी फड़क रही है।

एवं मीमांसमणायां वैदर्भ्यां देवकीसुतः ।

देवक्यानकदुन्दुभ्यामुत्तमःश्लोक आगमत् ॥ ३५ ॥

**शब्दार्थ**

एवम्—इस प्रकार; मीमांसमानायाम्—सोच-विचार करती हुई; वैदर्भ्याम्—रानी रुक्मिणी द्वारा; देवकी-सुतः—देवकी-पुत्र; देवकी-आनकदुन्दुभ्याम्—देवकी तथा वसुदेव सहित; उत्तमः-श्लोकः—भगवान् कृष्ण; आगमत्—वहाँ आ गये।

जब रानी रुक्मिणी इस तरह सोच-विचार में पड़ी थीं तब देवकी-पुत्र कृष्ण, वसुदेव तथा देवकी सहित, घटनास्थल पर आ गये।

विज्ञातार्थोऽपि भगवांस्तूष्णीमास जनार्दनः ।  
नारदोऽकथयत्सर्वं शम्बराहरणादिकम् ॥ ३६ ॥

**शब्दार्थ**

विज्ञात—पूरी तरह जानते हुए; अर्थः—बात; अपि—यद्यपि; भगवान्—भगवान्; तूष्णीम्—मौन; आस—रहे; जनार्दनः—कृष्ण; नारदः—नारदमुनि ने; अकथयत्—कह सुनाया; सर्वम्—सारी बातें; शम्बर—शम्बर द्वारा; आहरण—अपहरण; आदिकम्—इत्यादि ।

यद्यपि भगवान् जनार्दन यह भलीभाँति जानते थे कि क्या हुआ है किन्तु वे मौन रहे । तथापि नारदमुनि ने शम्बर द्वारा बालक के अपहरण से लेकर अब तक की सारी बातें कह सुनाई ।

तच्छ्रुत्वा महदाश्चर्यं कृष्णान्तःपुरयोषितः ।  
अभ्यनन्दन्बहून्बदान्प्रष्टुं मृतमिवागतम् ॥ ३७ ॥

**शब्दार्थ**

तत्—उसे; श्रुत्वा—सुनकर; महत्—महान्; आश्चर्यम्—आश्चर्य; कृष्ण-अन्तः-पुर—कृष्ण के निजी आवास की; योषितः—स्त्रियों ने; अभ्यनन्दन्—अभिनन्दन किया; बहून्—अनेक; अब्दान्—वर्षों के; नष्टम्—खोये; मृतम्—मरे हुए; इव—सदृश; आगतम्—वापस आया हुआ ।

जब भगवान् कृष्ण के महल की स्त्रियों ने इस अत्यन्त आश्चर्यमय विवरण को सुना तो उन्होंने बड़े ही हर्ष के साथ प्रद्युम्न का अभिनन्दन किया जो वर्षों से खोये हुए थे किन्तु अब इस तरह लौटे थे मानो मृत्यु से लौट आये हों ।

देवकी वसुदेवश्च कृष्णरामौ तथा स्त्रियः ।  
दम्पती तौ परिष्वज्य रुक्मिणी च ययुर्मुदम् ॥ ३८ ॥

**शब्दार्थ**

देवकी—देवकी; वसुदेवः—वसुदेव; च—तथा; कृष्ण-रामौ—कृष्ण तथा बलराम; तथा—भी; स्त्रियः—स्त्रियाँ; दम्-पती—पति-पत्नी; तौ—ये दोनों; परिष्वज्य—आलिंगन करके; रुक्मिणी—रुक्मिणी; च—तथा; ययुः मुदम्—प्रसन्नता को प्राप्त हुए ।

देवकी, वसुदेव, कृष्ण, बलराम तथा महल की सारी स्त्रियों, विशेषतया रानी रुक्मिणी ने, तरुण दम्पति को गले लगाया किया और आनन्द मनाया ।

नष्टं प्रद्युम्नमायातमाकर्ण्य द्वारकौकसः ।  
अहो मृत इवायातो बालो दिष्ट्येति हाब्रुवन् ॥ ३९ ॥

**शब्दार्थ**

नष्टम्—खोया हुआ; प्रद्युम्नम्—प्रद्युम्न को; आयातम्—आया हुआ; आकर्षणम्—सुनकर; द्वारका-ओकसः—द्वारकावासी; अहो—ओह; मृतः—मरा हुआ; इव—मानो; आयातः—वापस आया; बालः—बच्चा; दिष्ट्या—भाग्यवश; इति—इस प्रकार; ह—निस्सन्देह; अब्रुवन्—वे बोले।

यह सुनकर कि खोया हुआ प्रद्युम्न घर आ गया है, द्वारकावासी चिल्ला उठे, “ओह! विधाता ने इस बालक को मानो मृत्यु से वापस आने दिया है।”

यं वै मुहुः पितृसरूपनिजेशभावा-  
स्तन्मातरो यदभजत्रहरूढभावाः ।  
चित्रं न तत्खलु रमास्पदबिम्बबिम्बे  
कामे स्मरेऽक्षविषये किमुतान्यनार्यः ॥ ४० ॥

### शब्दार्थ

यम्—जिसको; वै—निस्सन्देह; मुहुः—बारम्बार; पितृ—पिता; स-रूप—समान; निज—अपने; ईश—स्वामी; भावाः—सोचने वाले; तत्—उसकी; मातरः—माताएँ; यत्—जितना कि; अभजन्—पूजा की; रह—एकान्त में; रूढ—पूर्ण विकसित; भावाः—भाव; चित्रम्—अद्भुत; न—नहीं; तत्—वह; खलु—निस्सन्देह; रमा—लक्ष्मी; आस्पद—शरण (कृष्ण); बिम्ब—स्वरूप का; बिम्बे—प्रतिबिम्ब रूप; कामे—साक्षात् कामवासना; स्मरे—कामदेव; अक्ष-विषये—अपनी आँखों के समक्ष; किम् उत—तो फिर क्या कहा जाय; अन्य—दूसरी; नार्यः—स्त्रियाँ।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि महल की स्त्रियाँ, जो प्रद्युम्न के प्रति मातृ-स्नेह रखतीं, एकान्त में उनके प्रति प्रेमाकर्षण का अनुभव करने लगीं मानो वे उनके स्वामी हों। दरअसल प्रद्युम्न लक्ष्मी के आश्रय भगवान् कृष्ण के सौन्दर्य के पूर्ण प्रतिबिम्ब थे और उनकी आँखों के सामने साक्षात् कामदेव के रूप में प्रकट हुए थे। चूँकि उनकी माता जैसे पद को प्राप्त स्त्रियों को भी उनके प्रति दाम्पत्य आकर्षण का अनुभव हुआ तो फिर इस विषय में क्या कहा जा सकता है कि उन्हें देखकर अन्य स्त्रियों ने क्या अनुभव किया होगा ?

तात्पर्य : जैसाकि श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती व्याख्या करते हैं, जब भी अन्तःपुर की स्त्रियाँ प्रद्युम्न को देखती उन्हें तुरन्त अपने स्वामी श्रीकृष्ण का स्मरण हो आता। श्रील प्रभुपाद ने भगवान् कृष्ण में निम्नानुसार टीका की है, “श्रील शुकदेव गोस्वामी ने बतलाया है कि प्रारम्भ में अन्तःपुर में रहने वाली प्रद्युम्न की सारी माताओं तथा विमाताओं ने उन्हें कृष्ण समझा और दाम्पत्य-प्रेम की इच्छा से दूषित होने से सकुचा गई। इसकी व्याख्या यह है कि प्रद्युम्न का स्वरूप हू-बहू कृष्ण जैसा था और वे साक्षात् कामदेव थे। इसलिए इसमें आश्चर्य की कोई बात न थी जब प्रद्युम्न की माताओं तथा अन्य स्त्रियों ने उन्हें इस प्रकार समझा। इस कथन से स्पष्ट है कि प्रद्युम्न के शारीरिक लक्षण कृष्ण से इतने मिलते-जुलते थे कि उनकी माता तक को उनके कृष्ण होने का भ्रम हो गया।”

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के दसवें स्कंध के अन्तर्गत “प्रद्युम्न-कथा” नामक पचपनवें अध्याय के श्रील भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए।